पाखण्डी साधु-सन्तों से हो रही धर्महानि
(सर्वधर्मसमभावका पोषण, राष्ट्र-धर्म के कार्यसम्बन्धी निष्क्रियता आदि)

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।]

अध्याय १ : धर्मके सम्बन्धमें अज्ञानमूलक विचार और उनपर उचित दृष्टिकोण

१. भगवा वेशधारी साधुओंका अध्यात्मके विषयमें अज्ञान १६

२. गुरुमन्त्रका सामर्थ्य व उस विषयमें अज्ञानी एक आधुनिक सन्त ! १७

३. हिन्दू धर्ममें बताया सूर्यनमस्कारका कृत्य हिन्दू धर्मसे सम्बन्धित होनेसे, अन्य पंथियोंकी सुविधाके लिए इसमें परिवर्तन करनेका अधिकार किसीको नहीं ! १८

४. ॐकार के बिना सूर्यनमस्कार करना धर्मविरोधी प्रथा; इसका समय रहते विरोध करना, प्रत्येक हिन्दूका धर्मकर्तव्य १८

५. 'ॐ' व 'अल्लाह'के उच्चारणका अंतर न समझनेवाले एक सन्त ! १९

६. तथाकथित महाराजका ध्यानयोगके विषयमें अज्ञान ! २०

७. महालक्ष्मी मन्दिरके गर्भगृहमें स्त्रियोंको प्रवेश देनेके सन्दर्भमें एक सन्तके हास्यास्पद विचार ! २०

८. धर्मशास्त्रके विषयमें (तथाकथित) सन्तका अज्ञान ! २१

९. धर्माचरणसंबंधी अनुचित बात बताकर भ्रमित करनेवाले सन्त ! २०

१०. स्त्रियोंका धर्मप्रसार हेतु घरसे निकलना अनुचित, ऐसा कहनेवाले एक धर्माधिकारी ! २२

११. अध्यात्मप्रचार करनेको अनुचित कहनेवाले एक धर्माधिकारी ! २३

१२. अनिष्ट शक्तियोंसे अपरिचित सन्त ! २३

१३. हिन्दुओंके सन्तोंको ही धर्मशिक्षाकी आवश्यकता ! २५

अध्याय २ : सर्वधर्मसमभाव होना अर्थात धर्मके प्रति गौरव न होना

१. सर्वधर्मसमभाव माननेवाले सन्त २७

२. संप्रदायके बोधचिन्हमें ‘ॐ’को विद्रूप बनानेवाले कथित सन्त २८

३. सम्प्रदाय बढानेके लिए अन्य पन्थियोंको सदस्यता देनेवाले सन्त २९

४. कुम्भमेलेका आयोजन मुसलमान मन्त्रीद्वारा किए जानेका समर्थन करनेवाले हिन्दूद्रोही धर्माचार्य हिन्दुओंमें धर्मतेज क्या जगाएंगे ? २९

५. मुसलमानोंको मन्दिरमें नमाज पढनेकी अनुमति देनेवाले दृष्टिहीन सन्त हिन्दुओंका क्या मार्गदर्शन करेंगे ? ३०

६. नमाज पढनेके लिए भी तैयार रहनेवाले एक हिन्दू सन्त ३०

७. हिन्दू संस्कृतिकी रक्षाके लिए कार्य करते हुए मन्दिरोंके साथ दरगाहका जीर्णोद्धार करनेमें धन्य माननेवाले एक राष्ट्रसन्त ३०

८. मुसलमानोंद्वारा आयोजित सर्वधर्मसमभाव सभामें उपस्थित रहनेवाले सन्त हिन्दुओंको क्या दिशा दिखाएंगे ? ३१

९. सर्व धर्मोंकी सीख एक ही होती है, यह कहनेवाले अज्ञानी सन्त ३१

१०. ‘सर्वधर्मसमभाव’ तत्त्वके कारण हिन्दुओंने गांधीयुगसे ही मार खाई है, तब भी अंधतासे उस तत्त्वका समर्थन करनेवाले एक सन्त ३२

११. सर्वधर्मसमभावी कवियोंको बुलाकर सम्मेलन आयोजित करनेवाले सन्त ३२

१२. राजनेताओं समान मुसलमानोंका गुणगान करनेवाले धर्मद्रोही सन्त ३२

१३. संस्था व ग्रंथोंके माध्यमसे ईसाईयोंको धर्मप्रसार करने देनेवाले सन्त ३३

१४. अन्य पन्थियोंका आदर करें; उनके त्यौहार जानबूझकर न मनाएं ! ३४

अध्याय ३ : राष्ट्र और धर्म कार्यके प्रति निष्क्रियता

१. हिन्दुत्वसे कोई लेना-देना न रखनेवाले कुछ सन्त-महन्त ! ३६

* हिन्दुत्वका कार्य करनेके स्थानपर खाने, पीने और पैसा बटोरनेमें मग्न रहनेवाले सन्त-महन्त ३६

२. राष्ट्र और धर्म पर आघात एवं हिन्दुओंकी वर्तमान स्थितिके विषयमें मौन रहना ३६

* राष्ट्र एवं धर्म संकटमें होनेपर भी, भक्तोंकी व्यावहारिक समस्याएं दूरकर उन्हें मायामें उलझाए रखनेमें स्वयंको धन्य समझनेवाले सन्त ! ३६

* हिन्दू ही न बचे, तो मठमें बैठनेवाले सन्त किसके सामने प्रवचन करेंगे ? ३७

३. दोमुही बातें करनेवाले सन्त अर्थात दैत्यगुरु ! ४२

४. प्रमुख साधु-सन्तों से मिलनेपर उनका सभामें आना स्वीकार करना; परन्तु अहंकारके कारण मिलकर कार्य न करना ४२

५. हिन्दुओंके लिए आपातकाल होनेपर भी, हिन्दू जागृतिको अल्प महत्त्व देनेवाले सन्त, समाजके समक्ष कौनसा आदर्श रखेंगे ? ४३

६. हिन्दुओंको संगठित करनेमें बाधक स्वामीजी ! ४३

७. गम्भीर परिस्थितिमें भी, इन साधु-सन्तों की आंखें नहीं खुलतीं, तो वे अपनेआपको 'सन्त' न कहलवाएं ! ४४

८. भ्रष्ट साधु-सन्तोंको उनके पदोंसे हटाने के लिए एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन करना आवश्यक ! ४४

अध्याय ४ : तथाकथित सन्तोंके कारण होनेवाले दुष्परिणाम

१. आजकलके अधिकांश महाराज लोगोंकी सिखानेकी पद्धति और उसकी फलोत्पत्ति ! ४६

२. लोगोंको साधना हेतु प्रवृत्त करनेके स्थानपर उन्हें परावृत्त करनेवाले कुछ तथाकथित महाराज और साधु-सन्त ! ४७

* राष्ट्र और धर्म कार्य हेतु त्याग करनेवालोंको पुन: मायामें जाने हेतु उद्युक्त कर उनको भ्रमित करनेवाले महाराज ! ४७

* कुछ (पाखण्डी) सन्तोंके अनुचित आचरणके कारण लोगोंका अन्य सन्तोंद्वारा किए जा रहे धर्मकार्यपर विश्वास न रहना ४८

३. हिन्दू सन्तोंकी भयावह स्थिति दर्शानेवाला स्वामी प्रदीप्तानंद का एक अनुभव ! ४९

४. आजकलके तथाकथित साधु-सन्तोंने की भारतीय संस्कृतिकी अपरिमित हानि ! ४९

५. बहुसंख्य सन्तोंकी वर्तमान स्थिति और इस कारण हिन्दू और भारत देश पर हुआ दुष्परिणाम ! ४९

६. हिन्दुओंकी दयनीय स्थितिके लिए सन्त ही उत्तरदायी ! ५०

७. 'कलियुगमें सन्तोंकी हुई दुर्दशा और उसका समाजपर पडा प्रभाव !', इसकी वर्तमान स्थिति दर्शानेवाले प.पू. डॉक्टरजी के विचार स्पष्ट करनेवाले 'एक विद्वान'का भाष्य ५१

८. 'सन्त और धर्माचार्योंपर कलियुगका प्रभाव होनेके कारण हिन्दुओंको देखनेवाला कोई न होना', प.पू. डॉक्टरजीका यह कथन स्पष्ट करनेवाला 'एक विद्वान'का भाष्य ५३

अध्याय ५ : सनातन संस्था और हिन्दू जनजागृति समितिकी तथ्यहीन आलोचना और सत्य

१. सनातन संस्थाकी तथ्यहीन आलोचना करना ५८

* एक महाराज और उनके सहयोगी द्वारा प.पू. डॉक्टरजी और सनातन संस्था के विषयमें दिए गए तथ्यहीन वक्तव्य ६०

* 'सनातन संस्था ईसाई पन्थका प्रचार करती है', जैसे असत्य आरोप लगानेवाले तथाकथित (ढोंगी) महाराजसे सावधान ! ७३

* एक धर्माधिकारीने की सनातन संस्थाकी कटु आलोचना ! ७४

* सनातनकी तथ्यहीन आलोचना करनेवाले एक धर्माचार्य ! ७६

* धर्मके लिए कुछ न करनेवाले एक शंकराचार्यद्वारा की गई दूसरे एक शंकराचार्य व सनातन प्रभात की तथ्यहीन आलोचना ! ७७

* 'अध्यात्म बेचा नहीं जाता', यह कहकर सनातन संस्थाके आध्यात्मिक ग्रन्थोंके विक्रयपर आपत्ति करनेवाले महन्त ! ७८

* सनातनके सन्त और समाजके अधिकांश तथाकथिते सन्तों कआचरणमें भेद ! ८२

२. हिन्दू जनजागृति समितिकी तथ्यहीन आलोचना ८४

* एक महाराजके विषयमें हुए कटु अनुभव ८४

* हिन्दुओंके लिए बहुत कार्य करनेके अहंके कारण हिन्दू जनजागृति समितिकी कटु आलोचना करना ८५

३. सनातन संस्था तथा हिन्दू जनजागृति समिति के कार्य ८७

अध्याय ६ : पाखण्डी साधु-सन्त तथा महाराजों के विषयमें 'सनातन संस्था एवं हिन्दू जनजागृति समिति' का आगामी कार्य ८९

भूमिका

विश्वकल्याणके लिए अपने शरीरको चन्दनके समान अर्पित करनेवाले हिन्दू सन्तोंके लिए ही कहा गया है, 'परोपकाराय सतां विभूतयः ।' अर्थात सज्जनोंका (सन्तोंका) जीवन दूसरोंके लिए समर्पित है । भगवा वस्त्र धारण कर जगद्गुरु आदि शंकराचार्यजीने पूरे भारतवर्षमें हिन्दू धर्मकी पुनर्स्थापना की तथा स्वामी विवेकानंदने हिन्दू धर्मकी पताका सातसमुद्रपार फहराई । इसी सन्तपरम्पराके अनेक महापुरुषोंने विश्वके सामने अद्वैत, विशिष्टाद्वैत इत्यादि तत्त्वज्ञान प्रतिपादित किए । हिन्दू सन्तोंने भगवद्भक्तिकी गंगा सबतक पहुंचाकर सबको भक्तिरससे ओतप्रोत कर समाजको शाश्वत आनन्दका मार्ग दिखाया । प्राचीन हिन्दू धर्मकी महिमा बढाने और संकटकालमें समाजका मार्गदर्शन करनेमें इन सन्तोंका योगदान अतुलनीय था ।

परन्तु, वर्तमान कलियुगमें इन साधु-सन्तोंकी परम्परामें अनेक पाखण्डी साधु-सन्त प्रवेश कर गए हैं । राष्ट्र और धर्म के कल्याण हेतु समर्थ रामदासस्वामी संन्यासी बने थे । अपने त्याग, अनासक्ति, वैराग्य, जनकल्याणकी उत्कट लगन और धर्मनिष्ठा के बलपर उन्होंने स्वधर्म सुरक्षित रखा और उसका विस्तार भी किया । उनके आदर्शोंपर चलते हुए आजकी विकट स्थितिमें खरे साधु-सन्तों को व्यापक दृष्टिकोणके साथ समाजको राष्ट्र और धर्म का कार्य करनेके लिए प्रेरित करना चाहिए । वे उचित मार्गदर्शन कर, समाजमें धर्मनिष्ठा बढाएं, यह नितान्त आवश्यक है । इस विकट घडीमें भी, अधिकतर साधु-सन्त राष्ट्र और धर्म पर होनेवाले आघातोंके विषयमें निष्क्रिय हैं । ऐसे निष्क्रिय साधु-सन्तों के कुछ उदाहरण इस ग्रन्थमें दिए हैं ।

धर्मके विषयमें अज्ञानके कारण और स्वार्थवश ये पाखण्डी साधु-सन्त हिन्दुओंको अनुचित दृष्टिकोण दे रहे हैं । उचित मार्गदर्शन तथा धर्मशिक्षा के अभावमें भावी पीढी अमूल्य आध्यात्मिक ज्ञानसे वंचित हो रही है । अध्यात्मके नामपर अपना स्वार्थ साधनेवाले पाखण्डियोंके कारण ही लोगोंका हिन्दू धर्म और धर्मशास्त्रीय कृत्यों से विश्वास उठता जा रहा है । इसके अतिरिक्त, स्वधर्मका अभ्यास और साधना न होनेके कारण कुछ तथाकथित साधु-सन्त 'सर्वधर्मसमभाव'रूपी रोगसे ग्रस्त हैं । सर्वधर्मसमभावका प्रचार कर, ये पाखण्डी साधु-सन्त हिन्दुओंके साथ घात कर रहे हैं । जिसका भयानक दुष्परिणाम सब हिन्दुओंको भोगना पड रहा है । इस ग्रन्थमें इसका भी विवेचन किया है ।

समाजको खरे धर्मसे परिचित करवाकर धर्मप्रसार करना, सारे साधु- सन्तों और धर्माचार्यों का प्रथम कर्तव्य है । परन्तु, राष्ट्र और धर्म कार्य के विषयमें स्वतः उदासीन रहनेवाले पाखण्डी साधु-सन्त और धर्माचार्य, प्रामाणिकतासे कार्य करनेवाली आध्यात्मिक संस्थाओं और संगठनों की अनुचित आलोचना कर रहे हैं । उनकी आलोचनाएं और उसका सत्य इस ग्रन्थमें दिया है ।

धर्मद्रोही, भ्रष्ट और दम्भी साधु-सन्त हिन्दू धर्म और महान संस्कृति पर लगे कलंक हैं । इसलिए, ऐसे ढोंगी साधु-सन्तों को पहचानकर वैध मार्गसे दूर करना और हिन्दुओंको धर्मशिक्षा देना खरे साधु-सन्तों का प्रथम कर्तव्य है । इनकी उदासीनता त्यागकर इस कार्यके लिए प्रयत्न करना अति आवश्यक है । सूज्ञ हिन्दू समाजको धर्महानि रोकनेका विचार गम्भीरतासे करनेकी तथा खरे सन्तोंको पहचाननेके लिए साधना करनेकी आवश्यकता है । यह कार्य कैसे करें, इस विषयमें भी इस ग्रन्थमें मार्गदर्शन किया है ।

'अब खरे साधु-सन्त और हिन्दू मिलकर, समाजके इन पाखण्डियोंके पाखण्डका वैध मार्गसे निर्मूलन करनेका प्रयत्न करें, जिससे धर्मग्लानि दूर हो और हिन्दू धर्मका पुनरुत्थान हो', यह भगवान श्रीकृष्णसे प्रार्थना है !'
– संकलनकर्ता

('खरे और पाखण्डी साधु-सन्त' ग्रन्थमालाकी भूमिका; ग्रन्थमालाके दूसरे खण्ड 'पाखण्डी बाबाओंसे सावधान !' में दिया है ।)